

This PDF you are browsing now is a digitized copy of rare books and manuscripts from the Jnanayogi Dr. Shrikant Jichkar Knowledge Resource Center Library located in Kavikulaguru Kalidas Sanskrit University Ramtek, Maharashtra.

KKSU University (1997- Present) in Ramtek, Maharashtra is an institution dedicated to the advanced learning of Sanskrit. The University Collection is offered freely to the Community of Scholars with the intent to promote Sanskrit Learning.

Website https://kksu.co.in/

Digitization was executed by NMM

https://www.namami.gov.in/

Sincerely,

Prof. Shrinivasa Varkhedi Hon'ble Vice-Chancellor

Dr. Deepak Kapade Librarian

Digital Uploaded by eGangotri Digital Preservation Trust, New Delhi https://egangotri.wordpress.com/

भाशि वायवकारिकाम् द्वांति हु द्वांति वादिवायका सहित वाद के हास भावि विद्वांति विद्वांति वाद के हास भावि विद्वांति वाद के हास भावि हिंदी के विद्वांति के विद्वांति वाद के हास भावि हिंदी के विद्वांति है के हिंदी के विद्वांति है के हिंदी के

Acc. No! - tog misso.

Title! - 3 m lastant

Author! = longso galant

subject! - poetry.

Subject! - poetry.



रागसो। न्यमेनां त्रं मध्यादे विद्वन्तवा वाने रताहर रांगितहो ने द्वान प्राणिता है व सह ने ने विद्वान के विद्वा

अनंतिक्वहेतानिक्वेणांवेदहेविद्यने॥ नामार्थे हेवहक्षुमाद्दार द्वरागसंत्रकः॥ मोर्गिवनाताकिते विदे हेतरकाद्यके ॥ भागति । नामार्णि हेवहमानिक्वा । भागति । भ

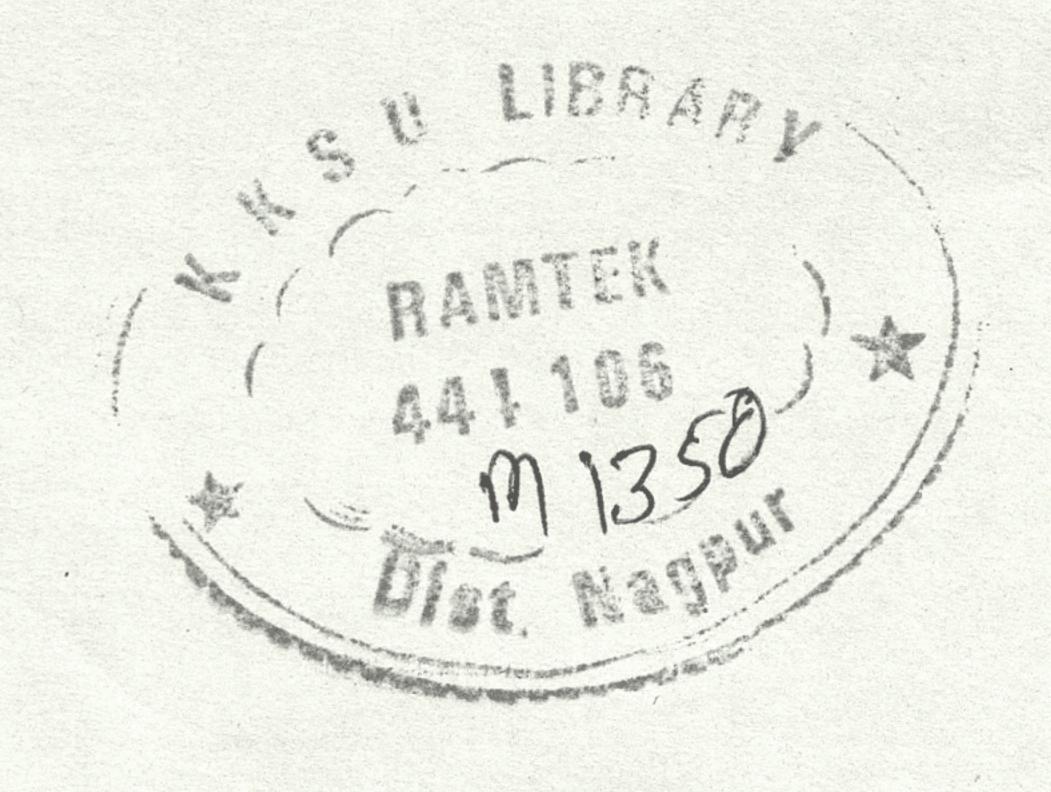
बनातीर स्वनावश्नी स्वनेताना कुं यान रहिन्दु बान स्वार सुंगी एगा प्रधान ये ति स्वित निर्मान स्वार मिल में हुन से कि स्वार स्वर स्वार स्वार





विस्मतंवाहरेनेदंतुलसाः पग्नामणान्य। विश्वसंगारि नीधनदायनीति गण्ययं ॥०५॥ क्रे श्रीनंभित्ताते पीदभित्त्राह्म मलिका भने ने कर शिक्य वित्मत्ति स्वित्ते विवाद प्रिया विश्व क्षेत्र स्वित्ते विवाद प्रिया विश्व क्षेत्र स्वित्ते विवाद प्रिया क्षेत्र स्वित्ते विवाद प्रिया क्षेत्र स्वित्ते क्षेत्र स्वित्त क्षेत्र स्वित्त क्षेत्र स्वित्त क्षेत्र स्वित्त क्षेत्र स्वित्त स्वत्त स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वित्त स्वत्त स्वित्त स्वत्त स्वित्त स्वत्त स्वित्त स्वत्त स्

ज्यार्मसंपन्नम्भानीलं कं हिस्सिननक विमान्य स्थितंक विदेन नं समान्। वाने २०० प्राप्ताः । इति रामकृष्णात्म जनारा यणेन विश्वितं सम्।





,CREATED=22.10.20 12:31 ,TRANSFERRED=2020/10/22 at 12:32:25 ,PAGES=6 ,TYPE=STD ,NAME=S0004376 ,Book Name=M-1350-KALIVINDNAM ,ORDER\_TEXT= ,[PAGELIST] ,FILE1=00000001.TIF ,FILE2=00000002.TIF ,FILE3=00000003.TIF ,FILE4=00000004.TIF ,FILE5=00000005.TIF

[OrderDescription]